बिलासपुर के संस्कारिक लोकगीत

DR. MEENA VERMA
Professor, Depatment of Music, Govt. College Bilaspur, Himacahl Pradesh

सार संक्षेपिका

लोकसंगीत की परंपरा में हिमाचल प्रदेश अपनी मौलिकता तथा सांगीतिक विशेषताओं के आधार पर अपना महत्त्व कायम किये हुए है। आज किसी भी संस्कृति को पूर्ण रूप से समझने के लिए संस्कारों का अध्ययन आवश्यक है क्योंकि संस्कार परिष्कृत संस्कृत का प्रभावी माध्यम है। भारतीय ग्रंथों में 16 संस्कार माने गये हैं लेकिन अब हिमाचल में केवल, जन्म विवाह और मृत्यु पर ही संस्कारों का महत्त्व रह गया है। बिलासपुर जनपद में गाये जाने वाला बिहाई गीत (जन्म के अवसर पर), विवाह गीत, तेल बटणा संस्कार गीत, विदाई गीत, बारह मासा, मोहणा आदि प्रचलित है। यह गीत निबद्ध–अनिबद्ध दोनों प्रकार से गाये जाते हैं।

बीज शब्द

बिलासपुरी लोकगीत, विदाई गीत, बारह मासा, मोहणा

भूमिका

लोकसंगीत की परंपरा में हिमाचल प्रदेश अपनी मौलिकता तथा सांगीतिक विशेषताओं के आधार पर अपना महत्त्व कायम किये हुए है। यहां लोक सगींत की समस्त विधाओं में लोक गायकों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। हिमाचली लोक संगीत के माध्यम से लोक गीतों की मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डालना लोक गीतों के मूलस्वरूप तथा लोक गीतों की पहचान के लिए एक सामयिक व उपयोगीत प्रयास सिद्ध होगा। लोक संगीत की विशेषताओं को निम्न शब्दों में व्यक्त किया जा सकता हैः–

- लोक संस्कृति, लोक गीतों के माध्यम से पीढ़ी जनश्रुति के आधार पर सुरक्षित रहती है तथा पीढ़ी दर पीढ़ी को विरासत में प्राप्त होती रहती है।
- लेकगीत स्वयं बनकर कंठ से फूटते हैं जिनका प्रवाह लोकानुरंजन बनता है।
- लेकगीतों का गीतकार एवं संगीतकार अज्ञात होता है।
- लोकगीतों में सामूहिकता, पुनरावृत्ति, मौखिक परंपरा व स्वछन्दता का समावेश अधिकांश रहता है।
- लोकगीत बनते और बिगड़तें रहतें हैं तथा जाति–पाति, देशकाल की सीमा के बंधन से मुक्त होते हैं।
- सामयिक विषयों के समावेश की प्रति अपनाते हुए भी छनद की मौलिकता बनाये रखना हिमाचली लोगीतों की विशेषता होती है।
- लोकगीत, भौगोलिक, ऐतिहासिक मान्यताओं तथा धार्मिक आस्थाओं और लोक संस्कृति के संरक्षण एवं विकास की प्रक्रिया का पारम्परिक व उपयोगी माध्यम है।

इन्हीं मौलिक विशेषताओं के आधार पर अनेकों बाहरी आक्रमणों के बावजूद भी लोकगीतों के माध्यम से हमारी सांस्कृतिक विरासत सुरक्षित रही है जिसका श्रेय उन अज्ञात गीतकारों और गायकों को जाता है जिन्होंने पीढ़ी दर पीढ़ी इस परंपरा को अक्षुण्ण बनाये रखा।

वर्तमान इलैक्ट्रॉनिक संचार माध्यमों के प्रचलन एवं अंधाधुंध अनुकरण से जहां वैज्ञानिक विधि से लोकगीतों के संरक्षण का सुअवसर प्राप्त हुआ है वहां लोक संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में लोकगीतों की मौलिक गेयता तथा शब्द रचना एवं परंपरा नष्ट–भ्रष्ट होने का भी भय पैदा हो गया है।

बिलासपुरी लोकगीतों का वर्गीकरण

संस्कृत साहित्य में संस्कार का प्रयोग शिक्षा, संस्कृति, प्रशिक्षण, सौजन्य, स्वरूप, परिष्करण, शोभा एवं धार्मिक विधि विधान आदि अर्थों से हुआ है। हिन्दी साहित्य में संस्कार का अर्थ सुधारना, शुद्धि, सफाई, धातुओं की चीजें मांजना, पवित्रीकरण, पूर्व जन्म से कृत्यों की वासना तथा द्विजातियों के शास्त्र विहित कृत्य (जो मनु के अनुसार 12 और कुछ विद्वानों के अनुसार 16 हैं) से लिया जाता है। इसके अनुसार जीवन की पूर्णता एवे सुख समृद्धि के लिए मनुष्य का अपने आप को शुद्ध एवं पवित्र करने की प्रक्रिया को भी संस्कार कहा जाता है। हिन्दु धर्म में मानव की सार्थकता विभिन्न संस्कारों के पूर्ण होने पर ही मानी जाती है। हमारे जीवन के सम्पूर्ण कृत्य धर्म संस्कारों से ओत–प्रोत है। व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास के लिए किये जाने वाले धार्मिक कृत्यों को ही संस्कार कहा जाता है।

आज किसी भी संस्कृति को पूर्ण रूप से समझने के लिए संस्कारों का अध्ययन आवश्यक है क्योंकि संस्कार परिष्कृत संस्कृत का प्रभावी माध्यम है। भारतीय ग्रंथों में 16 संस्कार माने गये हैं लेकिन अब केवल, जन्म विवाह और मृत्यु पर ही संस्कारों का महत्त्व रह गया है।

जन्म के अवसर पर गाये जाने वाले लोकगीत

बिलासपुर जनपद में गाया जाने वाला वात्सल्य रस से सम्बधित एक जन्मदिन का गीत प्रस्तुत है। इस गीत में बालक के जन्म दिन का वर्णन है। बच्चे को कृष्ण मुरारी की उपमा दी गई है। चारों ओर बाजे बज रहे हैं। ये पालना किस लकड़ी का बना है और यह डोर काहे की बनी है, कौन पालने को झुला रहा है? चन्दन का पालना बना है और रेशम की डोर बनी है। बच्चे के दुलार व प्यार का वर्णन वात्सल्य गीत के माध्यम से हुआ है। लोक गीत का स्थाई भाव स्नेह है।

बिहाई

लोकगीत के बोल

आओ रघुवर गाओ बधाई।
ईश्वर ने मन इच्छा पूरी कराई।।
काहे दा मैं पलणा कढ़ावां।
काहे दी मैं डोरा लगावां रघुवर।।

आओ रघुवर..................
लकड़ी दा मैं पलणा कढ़ावा।
रेशम दी मैं डोरां लगावां
आओ रघुवर...................
आयेगी दादी देवे चुल्हारे।
आयेगा दादा देवे चुल्हारे ।।
झुल मेरे प्यारे रघुवर
आओ रघुवर.......................

भावार्थ

यह गीत बालक के पैदा होने की खुशी में गाया जाता है। घर–मोहल्ले, रिश्ते नाते की महिलायें बिहाई – मंगल गीत को गाती है।

प्रस्तुत लोकगीत में भगवान रघुवर का स्वरूप बालक को माना गया है। ईश्वर का लाख शुक्रिया बालक के कुशल जन्म पर किया गया है। दादा – दादी के मन का भाव भी गीत में मुखरित होता है कि किस लकड़ी का पालना बनाया जाये, किस धागे की डोरी बांधी जाये। बालक के पालने को बारी – बारी हम झुलायेंगे। यह बालक के प्रति वात्सल्य प्रेम परिवार जनों का उमड़ रहा है।

स्वर लिपी ताल दादरा मात्रा–6

स्थाई

1	2	3	4	5	6
ग	ग	ग	म	ग	ग
आ	ओ	र	घु	व	र
सा	रे	रे	ग	सा	सा
गा	वो	ब	धा	ई	ऽ
ग	ग	ग	म	ग	रे
ईश	वर	ने	मन	इच	छा
सा	रे	रे	ग	सा	–
पू	री	क	रा	ई	ऽ
x			**0**		

अंतरा

1	2	3	4	5	6
सा	ग	म	प	प	–
का	हे	ऽ	दा	मैं	ऽ
म	ग	रे	गम	ग	–
पल	णां	क	ढ़ाऽ	वां	ऽ
ग	ग	–	म	ग	रे
का	हे	ऽ	दी	मैं	ऽ
सा	रे	रे	ग	सा	–
डो	रां	ल	गा	वां	ऽ
x			**0**		

शेष पंक्तियां इसी प्रकार गायी जायेंगी।

विवाह गीत

कुलजा स्थापना

शादी के समय सबसे पहले अपने कुल देवी/देवता की स्थापना की जाती है उस समय इस गीत को गाते हैं।

लोकगीत के बोल :

मैहलां दे अन्दर कुलजा जे आइयां
तेला दियां बेला हों हुण हो रहियां–2
लाड़े दी अम्मा जे कंगणे बनांदी
ओ माथे तिलक लगादियां
तेला दिया बेला हो हुण हो रहियां
इसी तरह सभी रिश्तों को लेकर गीत गाया जायेगा।

भावार्थ

शादी के दिन पहले एक कमरे में कुलदेवी की स्थापना करके पूजा अर्चना की जाती है। उस कमरे को कौरे का कमरा कहते हैं। कमरे के अन्दर कुलदेवी का आवाहन हुआ है। अब तेल–लेपन बन्ने–बन्नी को किया जाता है। बन्ने की मां उसे कगंना बांध रही है। माथे पर तिलक लगा रही है। इस प्रकार सभी सगे सम्बंधी बन्ने बन्नी को तेला लेपन करते हैं।

1	2	3	4	5	6	7
सा	रे	म	प	म	धप	म
मैल	लां	दे	अं	ऽ	दऽ	र
म	ध	प	ग	–	रेम	गरेसा
कुल	जा	जें	आ	ई	याऽ	ऽऽऽ
सा	रे	म	प	म–	धप	म
ते	ला	दियां	बे	लांहो	हुऽ	ण
म	–	धप	म	–	–	–
हो	ऽ	रहि	यां	ऽ	ऽ	ऽ
सा	रे	म	प	म	धप	म
म–	ध	प	ग	–	रेम	गरेसा
कंग	णे	ब	नां	दि	यांऽ	ऽऽऽ
सा	रे	म	प	म–	धप	म
कंग	णे	ब	नां	दीओ	माऽ	थे
म–	ध	प	ग	–	रेम	गरेसा
तिल	क	लं	गां	दि	यांऽ	ऽऽ
0			2		3	

शेष पंक्तियां इसी प्रकार गायी जायेंगी।

विवाह गीत तेल बटणा संस्कार

पण्डित द्वारा मुहूर्त निकाले जाने के बाद यह संस्कार शुरू हो जाता है। तेल का अर्थ है कि बटणा लगाने से पूर्व दुल्हा या दुल्हन को अपनी कुलदेवी या देवता के सामने बैठकर उनके सिर पर सभी नजदीकी एवं परिवार के सदस्य तेल डालते हैं एवं उसी जगह बटणा लगाया जाता है।

लोकगीत के बोल

ओ तु रणकेया सुयन कटोरिये आज तेले नो
अजर पैहलड़ा तेल संजोया कुवारी कन्या ने
ओ तु रणकेया................
अज दुजड़ा तेल संजोया लाड़े री अम्मां ने

ओ तु रणकेया............
अज तीजड़ा तेल संजोया लाड़े रे बापू ने
ओ तु रणकेया...........
इस तरह सभी सगे सम्बंधी रस्म परी करते हैं।

भावार्थ

सेने की कटोरी में तेल सुशोभित हो रहा है। सबसे पहला तेला–लापन कुंवारी कन्या द्वारा बन्ने–बन्नी को किया जा रहा है। दूसरा तेला–लापन बन्ने की मां द्वारा किया जा रहा है। तीसरा तेला–लापन बन्ने के पिता द्वारा किया जा रहा है।

स्वरलिपि ताल कहरवा ताल 8 मात्रा

1	2	3	4	5	6	7	8
						म	म
						ओ	तु
सा (ग–)	ग	सा	म	ग	म	प	पनि
र	ण	के	यां	सु	य	न	कऽ
म	म	प	म	ग	ग	म	प
टो	ऽ	ऽ	रि	ये	ऽ	आ	ज
ध	पम	प	मग	म	म	–	
ते	ऽऽ	ले	ऽ	ऽ	नो	ऽ	
x		**0**					

शेष पंक्तियां इसी प्रकार गायी जायेंगी।

विदाई गीत

लोकगीत के बोल

मेरी गुड़िया पटारूये, बापू जी तेरे कौन खेले
तेरे डोले रखाई देंगा, तीये करे जा अपणे
तेरे मैहलां दे अन्दर वे, बापूजी मेरा डोला अड़ेया
मैं तां मैहलां पटाई देंगा, तीये करे जा अपणे
तेरे मैहला दे अन्दर वे, बापू जी मेरी अम्मा रोये
तेरी अम्मा जो मनाई लैंगा, तीये करे जा अपणे
मेरी गुड़िया पटारूये, ताऊ जी तेरे कौण खेले
तेरे डोले रखाई देंगा, तीये करे जा अपणे
तेरे मैहलां दे अन्दर वे, ताऊ जी मेरा डोला अड़ेया
मैं तां मैहलां पटाई देंगा, तीये करे जा अपणे

तेरे मैहला दे अन्दर वे, ताऊ जी मेरी तायी रोये
तेरी तायी जो मनाई लैंगा, तीये करे जा अपणे

भावार्थ :

दुल्हन को विदा करते समय महिलाओं द्वारा सामूहिक रूप से विदाई गीत गाया जाता है। बेटी अपने पिता से कहती है कि मेरी गुड़िया पिटारू में हैं। बापू उसके साथ कौन खेलेगा। पिता कहते हैं कि मैं तेरी डोली में रख दूंगा। अब बेटी तू अपने घर जा। बेटी कहती है कि तेरे घर के अंदर मेरा फंस गया है बापू कहते हैं कि मै अपने घर का द्वार पटवा दूंगा, बेटी तू अपने घर जा। बापू जी घर के अंदर मेरी माता रो रही है। बेटी मैं तेरी मां को मना लूंगा, बेटी ते अपने घर जा।

स्वरलिपि कहरवा मात्रा–8

1	2	3	4	5	6	7	8
						प	प
						मे	री
ध़	सा	सा	–	रे	ग	ग	रे
गु	ड़ि	या	म	टा	ऽ	रू	ऽ
ग	रे	सा	सा	रे	ग	ग	रे
ए	ऽ	ऽ	बा	पू	जी	ते	रे
ग	–	रे	सा	सा	–	प	प़
कौ	ऽ	ण	खे	ले	ऽ	ते	रे
ध़	सा	सा	–	रे	ग	ग	रे
डो	ऽ	ले	र	खा	ई	दें	ऽ
ग	रे	सा	सा	रे	ग	ग	रे
गा	ऽ	ऽ	ति	ये	ऽ	क	रे
ग	–	रे	सा	सा	–		
जा	ऽ	अ	प	णे	ऽ		
x			**0**				

शेष पंक्तियां इसी प्रकार गायी जायेंगी।

बारह मासा

लोकगीत के बोल

आयो महीना चैत अम्मा मेरी चैत
चिंता मेरे मन बसी पिया गये परदेस
अज हुं न आंवदे
आयो महीना बसाख
आंगन पकी दाख जिउड़ा उदास जिउड़े ने डोलदी
मन विच करदी विचार मुख ते न बोलदी
आयो महीना जेठ, अम्बुए रे हेठ पखुआ मैं झोलदी
पिया गये परदेस जिउड़े ने डोलदी
आयो महीना हाढ़ आंगन खड़ी नार
देखेयां केजो मारदी
यौवन भरेया शरीर देखेयां केजो मारदी
आयो महीना सौण, मीठी–मीठी पौण पींगां मैं पौंदी
सखियां रे घरा घरा कंत मैं ना पींगां पौंदी
आयो महीना भादों, घटा घनघोर बिजली रा जोर
लश्के डरावनी पल पल करदी विचार मुख ते न बोलदी
आयो महीना आसु, सुण मेरी सासु पुत तेरा घर नहीं
जिस संग करदी सिंगार, वो पिया घर नहीं
आयो महीना कत्तक अम्मा मेरी कत्तक गिठड़ा मैं बालदी
सेकगा सोण जेया श्याम हवा ते बचौउंदी
आयो महीना मंघैर सीता कने बैर लेफां भरांदी
लेफां रे अन्दर सोणा श्याम हिउंदा ते बचाउंदी
आयो महीना माघ, सीता कने भाग, गिठड़ा मैं पूजदी
पिया गये परदेस सगन मैं पूजदी
आयो महीना पोह अम्मा मेरी पोह पाले पौंदे चौगणे
पिया गये परदेस अज हुं न आंवदे
आयो महीना फागण, पिया विच मगण फगुआ मैं गायो न
उड़ी जांदे अमीर गुलाल पिया घर आयो न

भावार्थ

विवाहित नायिका, यौवन के मद् में चूर है जिसका पति परदेस गया हुआ है, विरह के कारण पीड़ित है, प्रति एक मास के आगमन पर मन में नये से नये उन्मादों का उदगम् लिए हुए, बारह मासों में मौसम के बदलते हुए रंगों में रगं जाती है। अपनी विरह की व्यथा से मन ही मन अपनी उठती हुई यौवन की उन्माद भरी लहरों से अन्तर मन की पीड़ा से अपने यौवन को झुलसा रही है।

स्वरलिपि ताल रूपक मात्रा 7

1	2	3	4	5	6	7
सा	सा	सा	ग	ग	म	ग
आ	यो	म	ही	ऽ	ना	ऽ
प	–	प	प<u>नि</u>	ध	प	म
चै	ऽ	त	अ	म्मा	मे	री
प	–	प	पसां	<u>नि</u>ध	प	म
चै	ऽ	त	चिन्	ता	मे	रे
रे	–	नि़	सा	–	नि़सा	रे
म	न	ब	सी	ऽ	ऽऽ	ऽ
रे	रे	सा	सारे	प	पम	रेसा
पि	या	ग	येऽ	ऽ	पऽ	रऽ
मरे	सा	नि़	नि़सा	रेम	प<u>नि</u>	पम
देऽ	ऽ	स	अऽ	जऽ	हुं	ऽना
रे	–	नि़	सा	–	–	–
औं	ऽ	व	दे	ऽ	ऽ	ऽ
0			2		3	

अंतरा

प	प	प	नि	–	सां	नि
आ	यो	म	ही	ऽ	ना	ब
रें	–	रें	रें	रेंरें	नि	सां
सा	ऽ	ख	आं	गण	प	क्की
रे	–	रें	रें	रें	नि	सां
दा	ऽ	ख	जि	ऊ	ड़ा	उ
रे	–	रें	रें	रें	नि	सां
दा	ऽ	स	जि	ऊ	ड़े	नू
रें	–	नि	सां	–	पनि	प
डा	–	ल	दी	ऽ	ऽऽ	ऽ
पप	प	म	म	पसां	सांनि	पम
मन	वि	च	कऽ	र	दीऽ	विऽ
निप	म	रे	रेम	प	नि–	प
चाऽ	ऽ	र	मुऽ	ख	तेऽ	न
रे	–	नि़	सा	–	–	–
बो	ऽ	ल	दी	ऽ	ऽ	ऽ
0			2		3	

शेष पंक्तियां इसी प्रकार गायी जायेंगी।

मोहणा

लोकगीत के बोल

गईयां मिसलां ओ मोहणा गईयां मिसलां
तेरे राजे रे बनारसा जो गईयां मिसलां
आया फैसला ओ मोहणा आया फैसला
तेरे राजे रे बनारसा ते आया फैसला
तैं नी कितियां मोहणा तैं नी कीतियां
तेरे पाईये री कितियां तिज्जो बीतियां

आया मरणा मोहणा आया मरणा
तेरे पाईये रिये कीतियें आया मरणा
खम्ब गडुरे मोहणा खम्ब गडूरे
इस बेड़िया रे रेतड़ा खम्ब गडुरे
बारा बजी गये मोहणा बारा बजी गये
इसा साण्डु रिया घड़िया लो बारा बजी गये
चढ़ेयां तख्ते मोहणा चढ़ेयां तख्ते
अज पाईये रे बदले लो चढ़ेयां तख्ते
किस बजणी मोहणा किस बजणी
तेरी पंज बंद बंसुरी लो किस बजणी
किस बनणी मोहणा किस बनणी
तेरी पैणा री रखड़ी लो किस बनणी
खाई लै रोटियां मोहणा खाई लै रोटियां
अपनी अम्मा री बणाई री तु खाई लै रोटियां

भावार्थ

बिलासपुर जनपद में गाये जाने वाले लोकगीत का अपना अलग स्थान है। इस घटना प्रधान गीत को गाते समय अब भी लोग प्रायः रो पड़ते हैं। बिलासपुर के राजा विजय चन्द के पास मोहणा का भाई नौकर था। ये लोग मोरसिंगी गांव के रहने वाले थे। किसी कारण अपने गांव में झगड़ा हो जाने से मोहणा के भाई ने पड़ोसी को मौत के घाट उतार दिया। भाई ने कहा मोहणा तुम मेरा आरोप अपने सिर पर ले लो। हम राजा से गुहार करके तुम्हें बचा लेंगे। भोला मोहणा बातों में आ गया और सभी आरोप अपने ऊपर ले लिया। राजा ने मोहणा को फांसी की सजा सुना दी। गांव के लोग निरपराध मोहणा को फांसी लटकते हुए देख कर रो पड़े। लोक गीत का स्थाई भाव शोक है।

स्वरलिपि ताल दीपचंदी मात्रा 14

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
ध़	सा	–	सा	–	सा	–	रे	म	–	धप	म	ध	–
आ	या	ऽ	म	ऽ	र	ऽ	णा	ओ	ऽ	मोऽ	ऽ	णा	ऽ
प	ध	–	म	–	म	ग	र	–	प	प	–	प	म
आ	या	ऽ	म	ऽ	र	ऽ	णा	ऽ	ओ	ते	ऽ	रे	ऽ

मम	प	–	म	–	म	ग	रेग	सारे	म	म	–	–	–
पाई	ये	ऽ	री	ऽ	यां	ऽ	कीऽ	तिऽ	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	ध	–	प	म	प	ग	म	–	–	–	–	–	–
आ	या	ऽ	म	ऽ	ऽ	र	णा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
x			2				0			3			

यह गीत निबद्ध–अनिबद्ध दोनों प्रकार से गाया जाता है। अनिबद्ध प्रकार से यह बहुत विलम्बित लय में गाया जाता है।

शेष सभी अंतरे इसी प्रकार गाये जायेंगें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

एस. एस. चन्देल, बिलासपुर का इतिहास, शिवा प्रिंटरज
नरोत्तम दत्त, शास्त्री बिलासपुर का इतिहास
अमर सिंह, हिमाचली लोक साहित्य, सन्मार्ग एवं संस्कृति विभाग
जगदीश शर्मा, हिमाचल प्रदेश के लोक नृत्य, हिमकला एवं संस्कृति विभाग
हरि राम जस्टा, हिमाचल प्रदेश के लोक नृत्य, हिमकला एवं संस्कृति विभाग
डॉ. सूरत ठाकुर, हिमाचल प्रदेश के लोक वाद्य, अभिषेक प्रकाशन, चण्डीगढ़
आचार्य सुधाकर, नृत्य भारती, संगीत कार्यालय हाथरस
हरि राम जस्टा, हिमाचल गौरव, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली
श्री राम इकवाल सिंह, लोक कला परम्परा, नया समाज, दिल्ली
शांति अवस्थि, लोक नृत्य एवं लोक वाद्य,सम्मेलन पत्रिका, 1940
देवी लाल सामर, भारतीय लोक नृत्य, भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर
ज्वाला प्रसाद शर्मा, यादां दे परछावें घाटी, गुन्जन कला मंच, शिमला
शर्मा देव राज, गुग्गा जाहर पीर एस शर्मा, ग्रा. रटैहल, डा. घुमारवी जिला बिलासपुर (हि.प्र.)